हिन्दी विभाग

स्नातकोत्तर द्वितीय सत्रार्द्ध

पत्र संख्या :-06

दिनांक 22/08/2020

मीराबाई के पदों की व्याख्या

पद०-7 सखी मेरी नींद नसानी हो।
पिया को पंत निहारते, सब रैन बिहानी हो
सखियान मिले के सखी दई, मन एक न मानी हो
बिन देखे कल ना परे, जिय ऐसी ठानी हो
अंतर वेदना बिरह की वह पीर न जानी हो
ज्यों चातक घन को रहें, मछरी जिमि पानी हो
मीरा व्याकुल विरहिनी, सुध बुध बिसरानि है हो॥

व्याख्या :- प्रस्तुत पद में मीराबाई का विरहिणी रूप दृष्टिगोचर हुआ है। श्रीकृष्ण प्रेम में डूबी मीरा अपने जीवन का सुख-चैन, सुध-बुध यहाँ तक की अपनी नींद भी भुला बैठी है। मीरा अपनी सखी से कहती है कि हे सखी श्रीकृष्ण के प्रेम में मेरी नींद का नाश हो गया है क्योंकि अपने प्रियतम श्रीकृष्ण का ~~पंत~~ पंथ निहारते निहारते मेरी रात सुबह में बदल जाती है। मेरी व्यथा को जानकर तुम सभी सखियाँ मिलकर मुझे शिक्षा देती हो कि मैं व्याकुल ना रहूँ किन्तु मेरा मन तुम्हारी एक भी बात नहीं मानता। मेरे हृदय ने तो उन्हें देखने की ऐसी जिद ठान ली है कि उन्हें देखे बिना मेरे हृदय को चैन नहीं पड़ता। मेरा अंग श्री कृष्ण के बिरह से व्याकुल हो उठा है और मेरे मुख से निरंतर प्रिय श्री कृष्ण

की वाणी निकल रही है। इतना ही नहीं मेरे हृदय में विरह की वेदना ज्वाला बनकर धधक रही है किन्तु मेरे प्रियतम मेरी इस पीड़ा को समझ नहीं पा रहे हैं और मुझे दर्शन नहीं दे रहे हैं। मीरा अपनी व्यथा को चातक पक्षी और मछली के उदाहरण द्वारा व्यक्त करती हुई कहती है कि जिस प्रकार चातक पक्षी वर्षा जल के बादल के बिना व्याकुल रहता है और मछली पानी के बिना तड़पती रहती है ठीक वैसे ही तड़प मेरे हृदय के अंदर भी है। तात्पर्य यह है कि मेरे मन में कृष्ण के प्रेम से उत्पन्न पीड़ा जागृत होकर मुझे व्याकुल कर रही है। अपने प्रियतम श्री कृष्ण के प्रेम में मैं ऐसी दीवानी हो गई कि अपना सुध-बुध ही खो बैठी हूँ।

पद :-8. मैं गिरधर के घर जाऊँ।
गिरधर म्हारो साँचो प्रीतम, देखत रूप लुभाऊँ
रैण पड़े तब ही उठी जाऊँ, भोर भये उठि आऊँ
रैण दिना वाके संग खेलूं, ज्यूँ त्यूँ वाहि लुभाऊँ
जो पहिरावे सोई पहिरूं, जो दे सोई खाऊँ
मेरी उनकी प्रीत पुराणी, उण बिण पल न रहाऊँ
जहाँ बैठावें तितही बैठूँ, बेचे तो बिक जाऊँ
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, बार बार बलि जाऊँ॥

व्याख्या :- प्रस्तुत पद में श्रीकृष्ण के प्रति मीरा की

अनन्य भक्ति तथा समर्पण भाव दृष्टिगोचर होता है। समर्पण भी भक्ति के नाना रूपों में से एक है। अपने आराध्य के इशारे पर उठने-बैठने, उसकी इच्छा अनुसार रहने तथा उस पर सर्वस्व न्यौछावर कर देने के माध्यम से मीरा ने इस समर्पण-भाव को व्यक्त किया है।

मीरा कहती है कि मैं तो गिरधर के घर जाती हूँ। वही मेरा सच्चा प्रियतम है और मैं उसके रूप-सौन्दर्य पर मुग्ध हूँ अर्थात् कृष्ण के परम सौन्दर्य ने मेरे मन में दर्शन का लोभ उत्पन्न कर दिया है। अतः मैं उसके प्रेम के वशीभूत होकर उसके घर जाती हूँ। रात होते ही मैं उसके घर जाने के लिए तत्पर हो जाती हूँ तथा प्रातःकाल होते ही वहाँ से उठ आती हूँ। मैं रात-दिन उसके साथ खेलती हूँ तथा हर प्रकार से उसे रिझाने तथा प्रसन्न करने का प्रयत्न करती हूँ। अब वह मुझे जो भी पहनाए मैं वही पहनूँगी तथा जो कुछ खाने को दे, वही खा लूँगी। आशय यह है कि मैं अपनी इच्छा-अनिच्छा, रुचि-अरुचि सभी से मुक्त होकर पूर्ण रूप से कृष्ण के प्रति समर्पण कर दिया है। मीरा इसी भाव को और स्पष्ट करते हुए कहती है कि मेरी और उनकी (कृष्ण) प्रीति पुरानी है और मैं उनके बिना एक पल भी नहीं रह सकती। वह जहाँ चाहे मैं वहीं बैठ जाऊँगी और यदि वह मुझे बेचना भी चाहे तो मैं सहर्ष

बिक जाऊँगी।

मीरा कहती है कि गिरधर नागर यानी श्री कृष्ण मेरे स्वामी हैं तथा मैं बार बार उन पर न्योछावर होती हूँ।

नोट :- साँचो - सच्चा, रैण - रात, रैणदिना - रात-दिन, वाके - उसके, ज्यूँ - त्यूँ - किसी भी तरह से अर्थात् हर प्रकार से, वाहि - उसे, पहिरावै - पहनाए, जोई - वही तितही - वही ।

प्रस्तुतकर्ता

बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
(BRABU MUZAFFARPUR)
मो० नं० :- 8292271041
ईमेल :- benamkumar13@gmail.com

दिनांक
22/08/2020